|  |
| --- |
| 19. Oktober 2025 |
| **29. Sonntag im Jahreskreis C**  |
| Erste Lesung: Ex 17,8-13; Zweite Lesung: 2 Tim 3,14-4,2; Evangelium: Lk 18,1-8 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 |  |
|  | GL 423, 1+3! | Wer unterm Schutz des Höchsten steht |
|  | GL 424, 1+5! | Wer nur den lieben Gott lässt walten |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie |
|  | GL 437, 1-4 | Meine engen Grenzen |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre dir, Gott im heilgen Thron |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 121, 1-8 |   |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 49, 1 | Jubelt Gott zu |
|  | GL 67, 1 | Der Herr behütet dich |
|  | oder |  |
|  | GL 143, 2+3 | Dein Name, Herr, ist unser Hort |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Lebendig ist das Wort Gottes und kraftvoll.* |
|  | *Es richtet über die Regungen und Gedanken der Herzen.* |
|  |  |
| Credo: | GL 793 | Dich, o Gott, wir Vater nennen |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 416, 1+2 | Was Gott tut das ist wohlgetan  |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 414, 1+2!-5 | Herr, unser Herr |
|  | GL 453, 1-4 | Bewahre uns, Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | Marienlied |  |